International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(4): 25-28

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(4): 25-28
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-03-2023
Accepted: 07-05-2023

काशीराम
(शोधार्थी), संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
काशीराम
(शोधार्थी), संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

आधुनिक संस्कृत साहित्य में स्त्रियों की भूमिका

काशीराम

सारांश
प्रस्तुत शोध आलेख में मुख्य रूप से आधुनिक संस्कृत साहित्य में किये गयें स्त्रियों के योगदान का संक्षेपरूप में वर्णन किया गया हैं । जिसमें संस्कृत साहित्य में किये गये कुछ रचनओं का वर्णन स्पष्टरूप से दर्शाया गया हैं । इन रचनओं में इन रचनओं में आधुनिक सामाज का स्वरूप का स्पष्ट रूप से दिखाई देता हैं साथ- साथ सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक, सांस्कृतिक स्वरूप का वर्णन स्पष्ट रूप से प्राप्त होता हैं । अतः इसप्रकार आधुनिक संस्कृत साहित्य में स्त्रियों के अतुलनीय योगदान का वर्णन स्पष्टतः इस शोध लेख में देखने को प्राप्त होता हैं ।

कूटशब्दः आधुनिक संस्कृत साहित्य, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनितिक, योगदान, स्पष्टस्वरूप, आधुनिक संस्कृत कथा, पी. एच्.डी. विश्वविद्यालय

प्रस्तावना
संस्कृत साहित्य की परम्परा अत्यंत प्राचीन हैं । यह साक्षी हैं कि भारतीय समाज में स्त्रियों का स्थान अत्यंत गौरवपूर्ण रहा हैं । प्राचीन काल से ही भारत में स्त्रियों ने साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में अपना अतुल्यनीय योगदान दिया हैं संस्कृत साहित्य की बात करें तो इस क्षेत्र में स्त्रियों ने प्राचीन काल से ही अपना महान सहयोग दिया हैं । भारत के मध्यकालीन और वर्तमान समाज में स्त्रियों ने संस्कृत साहित्य के लिये महान कार्य किया हैं आज भी वह अनेक कार्यों मे पुरुषों से बहुत ही आगे बढती जा रही हैं ।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः । [1]

अर्थात
जहाँ पर स्त्रियों की पूजा होती हैं वहाँ पर देवता निवास करते हैं और जहाँ पर स्त्रियों का सम्मान नही होता हैं वहाँ पर किये गये सारे कार्य व्यर्थ हो जाते हैं ।
स्वातन्त्र्योत्तरकाल से संस्कृत जगत में अनेक प्रतिमायें प्रतिष्ठित हैं संस्कृत जगत का आधुनिक साहित्य के साथ में आ करके अपना सामर्थ्य पुनः स्थापित किया हैं ।
आज आधुनिक संस्कृत वाङ्गमय में स्त्रियों के सर्वांगीण विकास को चित्रित किया गया हैं । स्त्रियों ने प्रबुध्द, प्रगतिशील, वीर, उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर अपने सामर्थ्य शक्ति व बुध्दि से आगे बढती हुई चतुर्दिक विजय-पताका फहरा रही हैं ।

वह अपने सर्वांगीण विकास के लिये, विश्व की मंगल कामना के लिये और समानुरूप आत्म–परीक्षण के लिये समाज और सम्पूर्ण विश्व को प्रेरित कर रही हैं।

अतः स्त्रियों का संस्कृत काव्य के क्षेत्र में हो या कोई भी अन्य क्षेत्र हो हर क्षेत्र में स्त्रियों ने अपना महान योगदान दिया हैं। उनके इसी कार्यों के लिये तो वह आज समाज में या कोई अन्य क्षेत्रों के कार्यों में अपना महान योगदान पुरषों के समान कर रही हैं। आज संस्कृत की कोई ऐसी विधा नही हैं जिस विधा में वह आपनी रचनाओं के माध्यम से वह आपनी स्थिति को स्थापित नहीं कर रही हो। आधुनिक संस्कृत जगत की यदि बात करें तो इस क्षेत्र में स्त्रियों का महान योगदान हैं। उनकी भूमिका का लोहा आज भी हैं। वह अपनी कृर्तियों के माध्यम से आज के संस्कृत समाज को एक नया आयाम प्रस्तुत कर रही हैं। उनकी रचनाओं का और उनकी प्रतीभा का योगदान निम्न प्रकार से संस्कृत क्षेत्र में दिखाई देता हैं।

आधुनिक संस्कृत में साहित्य स्त्रियों की भूमिका

१ पंण्डिता क्षमाराव [2]- (१८९०-१९५४)

पंण्डिता क्षमाराव का जन्म सन् १८९० ई० को पुणे महाराष्ट्र प्रान्त में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० शंकर पाण्डुरंग संस्कृत के उच्चकोटि के विद्वान थे। पंण्डिता क्षमाराव का विवाह बम्बई के उच्चकोटि के शल्य चिकित्सक राघेवेन्द्र जी के साथ हुआ था। इन्होनें १९२० से १९३०तक अंग्रेजी भाषा मे लेखन कार्य किया तथा सन् १९३० से संस्कृत भाषा में ही लेखन कार्य किया। इनकी कथा रचना सन् १९५५ में प्रकाशित कथामुक्तावल्ली तथा कथापञ्चकम् [3] अनुष्टप छन्द मे पाँच कथायें संकालित है। सन् १९३८ में पंण्डिता की उपाधि से तथा १९४२ में सरस्वती चन्द्रिका उपाधि से आपको सम्मनित किया गया।

कथामुक्तवली की 'प्रेमरसोद्रेकः [4]', 'परित्यकता', 'तापसस्य', 'पारितोषिकम्', 'विधवोद्वाहसंकटम्', 'मत्स्यजीवी केवलम्', आदि १५ लघुकथाओं का संग्रह है। इन कथाओं का विषय प्रमुखतः सामाजिक बुराईयों, दुःखी पीड़ित महिलाओं (विधवा, बन्ध्या, तलाकशुदा) पर आधारित हैं। इनकी कथायें प्रायः दुःखान्त हैं। कथा प्रेमरसोद्रेकः - इसमे एक पिता अपनी पुत्री (अस्माँ) का मुँह देखने को तरस जाता हैं, क्योकि उसने अपनी हमिदा का परित्याग कर दिया था और पत्नी की प्रतिज्ञा थी कि उसकी पुत्री को उसके पति को दिखया जायें क्योकि हमिदा को बाँझ समझ कर घर से भागा देता है न जानते हुए कि वह उस समय गर्भवति है गर्भावास्था में घर से निकालने के बाद उसे बहुत शारिरिक मानसिक और आर्थिक समस्याओं का समाना करना होता है और पुत्री के जन्म के बाद मृत्यु भी हो जाती है पर वह मरते वक्त अपनी पुत्री को एक वृद्ध किसान दम्पति को पालन-पोषण को दे देती है उचित पालन पोषण के कारण अस्माँ को भी बहुत लगाव हो जाता है। एक दिन जब उसके पिता अस्माँ को लेने आते है तो वह जाने से साफ़ मना कर देती है वह वृद्ध दम्पति को धन का भी लोभ देता हैं पर वह भी लोभ में नही आते है और वह निराश शहर लौट जाता हैं।

मायाजालम्: इसमें चार माहिलाओं की कथा है, जो अपने पति या प्रेमियों द्वारा परित्यक्ता हैं। वे महिलाएं जब एकत्र मिलती हैं, तो अपने-अपने प्रेम–अनुभवों का वर्णन करती हैं। सम्पर्ण कथा मे कैतुहल व्याप्त है। कथान्त मे पाठक रहस्य को जान पाता हैं।

पंण्डिता क्षमाराव की भाषा काव्यानुरुप हैं मुहावरों और लोकोक्तियों से भरपूर है। कही–कही सुदीर्घ समास और क्रियापदों का प्रयोग होने पर भी साहित्यिक माधुर्य बना रहता है। भाषा- शैली और विषय–विन्यास की दृष्टि से इस कथासंग्रह को सही अर्थों में आधुनिक संस्कृत–लघुकथा-संग्रह की संज्ञा दी जाती हैं।

२ डॉ. वीणा पटानी (१५-०८-१९३२ - २००६)

डॉ. जी का जन्म उत्तराखण्ड के हल्द्वानी नामक स्थान पर एक उच्च कोटि के ब्राह्मण परिवार में सन् १९३२ ई० को हुआ था। आपने लखनऊ से प्रथमा, मध्यमा और शास्त्री, परीक्षा प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण कर १९५८ ई० पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की सन १९६० को कर्नल मोहन चन्द्र से आपका विवाह सम्पन्न हुआ। उसी समय मे आपने एक वर्ष लखनऊ विश्वविद्यालय में कार्य किया। १९६४ मे आप दिल्ली आई और सन् १९६५ई० मे जानकी देवी मेमोरियल महाविद्यालय में प्राध्यापिका के पद पर कार्य किया। आपके एक पुत्र रोचन तथा एक पुत्री रुचिरा हैं। सन् १९८२ ई० मे आपके पति की मृत्यु हो जाती हैं। आपके द्वारा लिखित चार पुस्तकें प्रकाशित हैं कथासाहित्य मे अपराजिता सात कथाओं का मौखिक संग्रह हैं इसके अतिरिक्त संस्कृत और अंग्रेजी भाषा मे अनेक विषयों पर लेख मिलते हैं। संस्कृत अकादमी उ० प्र० के द्वारा आपको सन् १९८८ मे 'मधुराम्लम्' की मौलिकता को दृष्टि मे देखकर सम्मानित किया गया। 'अपराजिता' के लिये सन् १९९६ मे संस्कृत अकादमी दिल्ली द्वारा सम्मानित किया गया।इसी वर्षा आपको संस्कृत अकादमी दिल्ली द्वारा संस्कृत साहित्य सेवा सम्मान प्रदान किया गया। अपराजिता जिन सात मौलिक कथाओं का संग्रह हैं उनमें 'कुलीना', 'अपराजिता', 'शंखना', 'अनुग्रहीता', 'वातायनम्', 'जागरिकता कथायें है जिसमें ६

कथायें नारी जीवन से सम्बधित किसी न किसी समस्या का वर्णन किया गया हैं।

'अपराजिता': [5] मध्यम वर्गीय विजया का विवाह एक ऐसे परिवार मे होता है जहाँ दहेज के लोभी पति और ससुराल वाले कुछ समय बाद दहेज की माँग करते है तब वह आत्मनिर्भर जीवन व्यतीत करने का निर्णय ले लेती है और उस समय पति को भी समझ आ जाता है अतः वह भी उसका साथ देने का निर्णय ले लेता है दोनों पति पत्नी साथ रहते है।

३ डॉ. नलिनी शुक्ला - (८ जून १९४०- २०११)

डॉ. नलिनी शुक्ला का जन्म ८ जून सन् १९४० कंघेसी ग्राम इटावा में हुआ था। आपके पिता का नाम इन्द्रदत्त मिश्र वकील थे और माता का नाम पद्मावती मिश्रा भक्तिभाव की सजीव मूर्ति थी। आपने एम. ए, पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद आचार्य नरेन्द्रदेव महिला महा विद्यायल कानपुर मे संस्कृत की प्रवक्ता नियुक्त की गई। 'पारिजात पत्रिका' मेरठविश्वविद्यालय और साहित्य अकादमी दिल्ली की सक्रिय सदस्या हैं। कई विश्वविद्यालय राष्ट्रीय-अर्न्तराष्ट्रीय आयोजनों, सम्मेलनों में संस्कृत नाटक संयोजिका एवं निर्देशिका रही है। आकाशवाणी दूरदर्शन, लखनऊ, दिल्ली, पूना मे अनेक कार्यक्रमों का प्रसारण भी हुआ हैं। आपके द्वारा संस्कृत हिन्दी मे लगभग २१ ग्रन्थ प्रकाशित–अप्रकाशित हैं जिसमें रुपक, नाटिका, गीतिकाव्य, कथासंग्रह (कथासप्तकम) आदि ग्रन्थ है।

कथासप्तकम: [6] में सातकथाओं का संकलन किया गया हैं जिसमें स्वयं के द्वारा लिखी गई कथायें है। 'कर्त्तव्यनिष्ठा', 'कलरवनिश्चन्ता च', 'अभिवर्धनम्', 'तन्नू', 'प्रत्नवस्त्रपोट्टलि-कामरणासन्न', 'शिशुश्य', 'सुषुमाया पत्रम्', 'अकृतार्थम अभिभावकत्वम्' ये सात कथायें है जिसमे सामाजिक वातारण का चित्रण किया गया हैं और नूतन सामाजिक समस्याओं का उल्लेख किया गया हैं। जैसे कि कर्तव्यनिष्ठा मे एक महावीर और बहादूर नामक दो बैंक प्रहरी के पात्र की कथा है जो लुटेरों से बैंक को बचते अपने प्राण दे देते हैं कुछ निशान मिलते है जिससे यह ज्ञात होता है कि बैंक लुटवाने की योजना बैंक के ही सुरक्षाधिकारी श्रीवास्तव का हाथ होता हैं और उसे पकड़ कर जेल भेज दिया जाता है इसी तरह अन्य भी कथायें हैं। इस प्रकार और भी बहुत सी स्त्रियों ने संस्कृत काव्य के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं जो बहुत ही सराहनीय कार्य कहा जाता हैं जैसे की आर्वाचीन संस्कृत साहित्य की बात करें तो इसमें स्त्रियों का स्वरूप स्पष्ट रूप से दिखाई देता हैं यथा श्री मती शीला भट्टारिक, देवकुमारिका, गंगादेवी, मधुरवाणी, ये सभी विदुषी १७ वीं शताब्दी में प्रख्यात कवयित्रियाँ थी वहीं २० एवं २१ शताब्दी में भी अनेक प्रख्यात महिला कवित्री हैं जैसे विज्जिका, लक्ष्मी, मोरिका, इन्दुलेखा व डॉ. पुष्पा दिक्षित, डॉ. मिथीलेश कुमारी मिश्रा, डॉ. रत्ना वसू, डॉ. रमा सिंह, प्रो. मीरा द्विवेदी, डॉ. मोहिनी आर्या, डॉ. शिल्पा कुमारी, डॉ. शिष्टिदात्री भारद्वाज, डॉ. करुणा आर्या, आदि लेखिकाओं ने आधुनिक संस्कृत साहित्य को समर्ध और कर्ताथ किया हैं प्रणाम हैं ऐसी धरा को जिन्होनें ऐसी नारी सामर्थ्य को प्रज्वालित किया और सम्पूर्ण विश्व में प्रसार प्रचार करवाया आधुनिक काल में।

उपसंहार

अतः इस प्रकार आधुनिक संस्कृत साहित्यिक के क्षेत्र में स्त्रियों का अतुल्यनीय योगदान माना जाता हैं साहित्य की हर विधा में अपना सहयोग किया हैं जिससे आज के अर्वाचीन संस्कृत जगत में स्त्रियों का एक महत्वपूर्ण स्थान माना जाता हैं आज के इस युग में जहाँ पुरुष अपने कार्यों को बहुत ही सरलता के साथ में कर लेते है वैसे ही स्त्रियों ने भी आपना कार्य बहुत ही प्रेरणा के साथ में करती आ रही हैं आज संस्कृत के अर्वाचीन साहित्य् की जो भी विधा हो जैसे कहानी, उपन्यास, कथा, नाटक, काव्य, लालित निबन्ध, निबन्ध, पत्र लेखन, गद्य साहित्य आदि जो भी विधा हो हर विधा में अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं इस प्रकार आधुनिक संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती हैं।

देववाणी के लिये एक श्लोक कहा गया हैं –

"आत्मा यथा शरीरेषु तथा भाषासु संस्कृतम्।
वर्तते लोकभाषाणां तत्समवायिकारणम्" ॥

सन्दर्भ

1. मनुस्मृति- ३ /५६
2. आधुनिकसंस्कृतसाहित्येतिहासः, डॉ.राम कुमारदाधीच, हंसा प्रकाशन् चांदपोलबाज़ार, जयपुर, प्र०संस्करण २०१८, पृ० सं०९२
3. कथापंञ्चकम् (पद्य कथासंग्रह) पंण्डिताक्षमाराव, सहकारी भंडार नवाकाल वाड़ीगिर गाँव बम्बई १९३३ पृ० सं० ०७
4. कथामुक्तावली – (कथासंग्रह) पंण्डिता क्षमाराव, न० म० त्रिपाठी लि० पिंसेस स्ट्रीट मुम्बापुरी (मुम्बई) १९५४ पृ० सं० ५

5. अपराजिता, (कथासंग्रहः) वीणापाणिपाटानी, नागप्रकाशक, ११ए/यू ए.जवाहरनगर, दिल्ली ११०००७ प्रथम संस्करण १९९४
6. कथासप्तकम्, डॉ. नालिनी शुक्ला,शिक्षकप्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण-१९८४
7. आधुनिक काल का संस्कृत गद्य साहित्य, "शास्त्री" राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, १९९५
8. आधुनिक संस्कृत साहित्य, "भार्गव" दयानन्द, राजस्थानी ग्रन्थागार सोजाती गेट के बाहर जोधपुर, राजस्थान, १९८७
9. राजस्थान के प्रमुख संस्कृत मनीषी, डॉ. "शर्मा" मधुबाला रचना प्र् काशन चाँद बाजार जयपुर राजस्थान जयपुर -३०२००१, २०१९
10. संस्कृतसाहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, त्रिपाठी बाबूराम, विनोद पुस्तक मंन्दिर आगरा १९७३
11. संस्कृत वाङगमय का बृहद इतिहास, सप्तम खण्ड प्र.सं. "उपाध्याय" बलदेव उ.प्र. संस्कृत संस्थान, लखनऊ २०००
12. संस्कृत साहित्य का इतिहास "उपाध्याय" बलदेव, शारदा निकेतन ५ बी.सिगरा वाराणसी १९९९
13. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षत्मक काव्यशास्त्र, "मिश्र" म. म. प्रो. अभिराज राजेन्द्र विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी- २०१०

कोश ग्रन्थ

1. अमरकोश "नारायण" अमरसिंह विरचित चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी १९९५
2. अष्टाध्यायीसूत्रपाठ मिश्र "श्रीनारायण" , पाणिनी गोकुलदास संस्कृतग्रंथमाला वा. १९७१
3. शब्दकल्पद्रुम बहादुर "राजाराधाकान्तदेव, मोतीलाल बनारसी सं दिल्ली १९६१
4. संस्कृत हिन्दी कोश आप्टे "वामन शिवराम", रचना प्रकाशन चाँदपोलजयपुर २००५

अन्तर्जालीय स्त्रोत

1. www.docs.google.com
2. www.lib.shodhganga.
3. www.lib.du.ac.in
4. www.lib.jnu.ac.in
5. www.sanskritbhasi.blogspot.com
6. www.sanskrit.nic.in
7. www.wikipedia.org
8. www.worldcat.or